4. **राष्ट्रवाद का उद्देश्य :** राष्ट्रवाद का उद्देश्य साझा सामाजिक विशेषताओं जैसे सँस्कृतिक, जातीयता, भौगोलिक स्थिती, भाषा, राजनिती, धार्मिक परंपराओं और एक साझा एकीकृत/एकिकृत इतिहास में विश्वास के संयोजन के आधार पर एकल राष्ट्रीय पहचान का निर्माण और रखाव करना है। और यह भी की राष्ट्रीय एकता या एकजुटता को बढ़ावा देना है।

5. भारतीय राष्ट्रवाद क्या है : भारतीय राष्ट्रवाद कुछ सीमा तक उपनिवेशवादी निती तथा उन नितीयों से उत्पन्न भारतीय प्रक्रियाएं के परिणामस्वरूप ही उभरा था। पाश्चात्य शिक्षा का विकास (Development of Western Education), मध्यवर्ग का उदय (Rise of Middle Class), रेलवे का विस्तार (expansion of Railway), तथा सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनों ने राष्ट्रवाद की भावना के विकास को अग्रसारित किया। यहीं से शुरूआत होता है भारतीय राष्ट्रवाद।

6. भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में सहायक कारक : भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में सहायक कारक की चर्चा मैंने पहले विषयवार के अन्तर्गत कर दिया। अब केवल भारतीय राष्ट्रवाद संक्षिप्त में बिन्दुवार रेखांकित कर रहा हूँ।

भारतीय राष्ट्रवाद कुछ हद तक उपनिवेशवादी निती तथा उन नितीयों से उत्पन्न भारतीय प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप उसी का प्रतीबिम्ब है। इनमें महत्वपूर्ण बिन्दु कुछ ऐसे हैं। —

1. औपनिवेशिक प्रशासन :
2. भारतीय पुनर्जागरण :
3. पाश्चात्य शिक्षा एवं चिन्तन :
4. प्रेस तथा समाचार पत्रों की भूमिका
5. रेलवे का विकास (Evolution of Railway)
6. सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनें (Social & Religious Revolts)
7. समकालीन यूरोपीय आन्दोलनों का प्रभाव : इस परिप्रेक्ष्य को भारत के राष्ट्रवाद के उदय के सहायक कारकों का बाह्य कारक भी कह सकते हैं। उदाहरण स्वरूप : 1776 - अमेरिका की स्वतन्त्रता प्राप्ति, 1789 - फ्रांस की निती, 1894 - 1895 जापान की चीन पर विजय, 1904 - 1905 जापान की रूस पर विजय